"सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और मुक्तिबोध"

दिनांक : 26-28 मार्च, 2018

(त्रि- दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी)

उद्घाटन : 2 बजे अपराह्न

हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर

द्वारा आयोजित

सहयोग : भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली

तथा ओ.एन.जी.सी. त्रिपुरा परिसंपत्ति, अगरतला

आयोजन-स्थल :

सभागारसं. 2,अकादमिक भवन संख्या-11

त्रिपुरा विश्वविद्यालय

आयोजन समिति

संगोष्ठी-सरंक्षक

प्रो. अंजन कुमार घोष

कुलपति

त्रिपुरा विश्वविद्यालय

संगोष्ठी-अध्यक्ष

प्रो. अशेष गुप्ता

विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग

संगोष्ठी-संयोजक

डॉ .काली चरण झा

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

संपर्क : 09436928223

ईमेल- jhakalicharan44@gmail.com

सह-संयोजक

डॉ. मनोज कुमार मौर्य

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

संपर्क: 09560515608

ईमेल- mauryahcu@gmail.com

संगोष्ठी का उद्देश्य :

गजानन माधव मुक्तिबोध समकालीन हिंदी कविता और काव्यालोचना को गहरे अर्थों में प्रभावित करने वाले सजग , संजीदा और समर्थ रचनाकार हैं। उनका समस्त साहित्य उस संवेदनशील रचनाकार की मार्मिक अभिव्यक्ति है जिसने अपने युग-यथार्थ को बाह्य एवं आंतरिक दोनों स्तरों पर गहराई से महसूस किया। स्वाधीनता के बाद देश जिस भ्रष्ट, शोषक और अन्यायपूर्ण व्यवस्था के दंश को झेल रहा था मुक्तिबोध अपनी कविताओं में उस व्यवस्था का असली चेहरा सामने लाते हैं और साथ ही उसमें व्यक्ति की अपनी भूमिका पर प्रश्न-चिन्ह भी लगाते हैं। राजनीतिज्ञों, पूँजीपतियों एवं बुद्धिजीवियों की दुरभिसंधि के बीच मध्यवर्ग की उदासीनता जिस संकट को जन्म दे रही थी मुक्तिबोध का साहित्य उसका विस्तृत वर्णन है। अपनी रचनाओं में 'अभिव्यक्ति के खतरे' उठाते हुए उन्होंने 'वस्तु' और 'रूप' के स्थापित ढाँचों को चुनौती दी। इसीलिए तत्कालीन समय में उनका साहित्य चर्चित होने के साथ-साथ बहुविवादित भी रहा और उसका समुचित मूल्यांकन उनके जीवन-काल के बाद ही संभव हो पाया।

हिन्दी कविता के इतिहास एवं मुक्तिबोध के कवि जीवन में , सन् 1943 में प्रकाशित 'तार-सप्तक' एक नई काव्य-चेतना का संदेशवाहक बनकर आया। 'अज्ञेय' के संपादन में सात कवियों के इस संग्रह में मुक्तिबोध की सोलह कविताएँ प्रकाशित हुईं। तार-सप्तक से उन्हें पहचान तो मिली लेकिन जीवन में संघर्ष का सिलसिला चलता ही रहा। जीवनयापन के लिए अलग-अलग शहरों में अध्यापकीय से लेकर संपादकीय तक, उन्हें जो काम मिला वे करते रहे। उज्जैन , बनारस, कलकत्ता, जबलपुर, नागपुर, इलाहाबाद आदि शहरों में भटकते हुए भी अपनी आस्थाओं को समेटे हुए, आर्थिक विपन्नता व अस्थिरता को झेलते हुए अत्यंत कष्टपूर्ण समय में भी उन्होंने अपनी रचनात्मकता को जीवित रखा। प्रकाशचन्द्र गुप्त के प्रभाव व नेमिचंद्र जैन की मित्रता से मार्क्सवाद में उनकी आस्था बढ़ती गई जो उनके लेखन में साफ झलकती है। यूँ तो उनके साहित्य में प्रगतिशीलता से लेकर मार्क्सवाद , समाजवाद, अस्तित्ववाद और रहस्यवाद तक की प्रवृत्तियां मौजूद हैं , जिसकी मुकम्मल तलाश होनी अभी बाकी है|

कुछ समय के लिए मुक्तिबोध 'हंस' के संपादकीय विभाग में भी रहे लेकिन उनकी संपादन कला का उत्कर्ष 'सारथी', 'नया खून' में देखने को मिलता है। इनमें साहित्यिक लेखन के आलावा उन्होंने राजनीतिक विषयों पर अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य तथा देश की आर्थिक समस्याओं पर 'यौगन्धरायण' और 'अवंतीलाल' छद्म नाम से लगातार लेख लिखा. मुक्तिबोध ने 'कम्युनिज्म का संक्रमण-काल', 'एशियाई-अफ्रीकी राष्ट्रवाद का संयुक्त मोर्चा ', 'रूसी निषेधाधिकार', 'अमरीका में व्यक्तित्व-विभाजन की समस्या ', उनके दिशा निर्देश में हिंदी पत्रकारिता ने परिवर्तनकामी गतिशीलता का तेवर ग्रहण किया। उन्हीं दिनों जबलपुर से निकलने वाली पत्रिका 'वसुधा' में उनकी लिखी 'एक साहित्यिक की डायरी' धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो रही थी। 'कामायनीः एक पुनर्विचार' के माध्यम से वे पहले ही एक नई समीक्षा-दृष्टि का एलान कर चुके थे। उनकी मौलिकता साहित्यिक इलाकों में सहज स्वीकार्य नहीं हो रही थी। इसीलिए जीवन की भटकन से भी उन्हें मुक्ति नहीं मिल पा रही थी।

ज़िन्दगी जब एक सुखद भविष्य की ओर करवट ले रही थी तभी मुक्तिबोध के साहित्यिक जीवन में एक और बड़ी दुर्घटना घटी। सन् 1962 में उनकी पुस्तक **'भारत: इतिहास और संस्कृति'** पर मध्य प्रदेश सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया। बाद में उच्चन्यायालय के आदेश पर पुस्तक के आपत्तिजनक अंश को हटाकर पुन: प्रकाशित किया गया | इस घटना ने मुक्तिबोध को बुरी तरह झकझोर दिया। उन्हें अपने आस-पास हर ओर एक षड्यंत्र दिखाई पड़ने लगा। भयंकर असुरक्षा की भावना उन्हें घेरने लगी जिसके परिणामस्वरूप फरवरी सन् 1964 में उन्हें पक्षाघात का झटका लगा। कई लेखक साथियों के अनुरोध पर सरकारी मदद से उन्हें नई दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में भर्ती किया गया लेकिन उच्च चिकित्सा व्यवस्था भी उन्हें बचा न सकी। अंततोगत्वा 11 सितंबर, सन् 1964 को मुक्तिबोध को अपनी पीड़ा से छुटकारा मिल गया।

मुक्तिबोध की 'अंधेरे में' और 'ब्रह्मराक्षस' कविता विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से पढ़ी- पढ़ाई जाती है | आज के समय में मुक्तिबोध सबसे अधिक प्रासंगिक लगते हैं क्योंकि वे अपनी यथार्थवादी रचना- प्रक्रिया के द्वारा न सिर्फ मानवीय चेतना को जागृत करते हैं बल्कि चुनौतियों को स्वीकारने की प्रेरणा भी देते हैं| मुक्तिबोध के लेखन का एक ही विषय है - मानव-आत्मा की तलाश और उसकी जय-यात्रा. उनकी जीवन भर यही कामना थी कि "मेरे नगरों और ग्रामों के सभी मानव सुखी , सुन्दर और संपन्न कब होंगे ?" और उनके इस सद्भाव को जानने के लिए उनकी रचना में मनुष्य, समाज, संस्कृति और इतिहास के अंतर्संबंधों की गहन पड़ताल आवश्यक है| मुक्तिबोध के सम्बन्ध में संक्षेप में कुछ भी कहना कठिन है | इसलिए अकादमिक परिसंवाद के लिए मुक्तिबोध को लेकर तीन दिन की संगोष्ठी का आयोजन हिंदी-विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय द्वारा किया जा रहा है , जिसमें निम्नलिखित बिन्दुओं को केंद्र में रखकर चर्चा-परिचर्चा होगी |

1. भारतीय इतिहास, संस्कृति और मुक्तिबोध
2. भारतीय लोकतंत्र और मुक्तिबोध का साहित्य सृजन
3. राष्ट्रवाद के प्रश्न और मुक्तिबोध का साहित्य
4. विचारधारा के निकष पर मुक्तिबोध
5. चेतन-अवचेतन का द्वंद्व और मुक्तिबोध का साहित्य
6. मुक्तिबोध की पत्रकारिता
7. नयी कविता का आत्मसंघर्ष और मुक्तिबोध का काव्य
8. फैंटेसी की रचना-प्रक्रिया और मुक्तिबोध का साहित्य
9. चेतन-अवचेतन का द्वंद्व और मुक्तिबोध का साहित्य
10. मुक्तिबोध : कल और आज

नोट : सभी प्रतिभागी दिनांक 21 मार्च 2018 तक अपना पूर्ण प्रपत्र (शोध आलेख)/प्रपत्र-सारांश निम्नलिखित ईमेल पर भेजें| चयनित प्रपत्र की सूचना प्रतिभागी को 22 मार्च तक दे दी जाएगी| पंजीकरण शुल्क 500 रुपए निर्धारित हैं|

स्वागत-उपसमिति

हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

आवास, यातायात एवं भोजन-उपसमिति

संयोजक : डॉ. जय कौशल. सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

सदस्य : मुनीन्द्र मिश्र , अमर देवबर्मा, तनुश्री डे, तितास शील, कुसमी देबबर्मा

तकनीकी-उपसमिति

संयोजक : डॉ. मनोज कुमार मौर्य, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

सदस्य : राजबहादुर पुष्कर, सोमा रविदास, चयनिका चक्रवर्ती, हैप्पी देबबर्मा

सांस्कृतिक कार्यक्रम-उपसमिति

संयोजक : डॉ. जय कौशल. सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

सदस्य : संचाली कर, तृष्णा राय, धीमन भट्टाचार्य, रियंका रॉय, जुई देवबर्मा, खुम्बार जमातिया, उर्वशी कलई

वित्त-उपसमिति

संयोजक : डॉ. मनोज कुमार मौर्य, सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

सदस्य : पासंग रुकू, रायसाहब पाल, मुन्नी चाकमा,

नोट: अंतिम समय में परिवर्तनीय|